कृष्णाय वासुदेवाय हरये परमात्मने

इन पाठों के बारे में

स्रोत	हर पाठ अपने स्रोत, परम्परा और संस्करण के साथ छपा है। अन्य परम्पराओं और संस्करणों में शब्दों में थोड़ा अन्तर हो सकता है।
लिप्यन्तरण	रोमन पंक्ति देवनागरी से बना IAST लिप्यन्तरण है (ā = दीर्घ आ, ṃ = अनुस्वार, ḥ = विसर्ग, ś/ṣ = श/ष, c = च)। हिन्दी, अवधी और ब्रज पाठों में शब्द के अन्त का मौन 'अ' नहीं लिखा जाता। लिप्यन्तरण में वैदिक स्वर नहीं दिखते।

कृष्णाय वासुदेवाय हरये परमात्मने

प्रकार	स्तुति
देवता	भगवान श्रीकृष्ण
संस्करण	प्रचलित पाठ
परम्परा	वैष्णव
स्रोत	श्रीमद्भागवत महापुराण — Bhagavata Purana 10.73.16
आभार	पौराणिक; सार्वजनिक।

कृष्णाय वासुदेवाय हरये परमात्मने ।

kṛṣṇāya vāsudevāya haraye paramātmane |

प्रणतक्लेशनाशाय गोविन्दाय नमो नमः ॥

praṇataklеśanāśāya govindāya namo namaḥ ||

अर्थ

वसुदेव-पुत्र कृष्ण, हरि, परमात्मा, शरणागतों के क्लेश का नाश करने वाले गोविन्द को बारम्बार नमस्कार।

स्रोत-सहित पारम्परिक पाठ। किसी निश्चित परिणाम का दावा नहीं।

इस दस्तावेज़ के बारे में

इस दस्तावेज़ के पाठ सार्वजनिक (पब्लिक डोमेन) पारम्परिक भक्ति पाठ हैं या हमारी टीम द्वारा लिखे गए हैं, और अपने दर्ज स्रोत व संस्करण के साथ छपे हैं।

अर्थ हमारे शब्दों में संक्षिप्त व्याख्याएँ हैं, विद्वत्तापूर्ण अनुवाद नहीं। किसी पाठ के अपने श्लोकों में बताए लाभ पाठ का अंश हैं, गारण्टी नहीं।

कुछ साधनाएँ परम्परा से गुरु-मार्गदर्शन में की जाती हैं। अपनी परम्परा के मार्गदर्शन का पालन करें।